लहसुन की खेती

यह रबी की एक नगदी फसल है। इसमें विटामिन सी, फास्फोरस तथा कुछ अन्य प्रमुख पौष्टिक तत्व पाये जाते हैं इसका उपयोग अचार, चटनी व मसाले के रुप में किया जाता है। इसमें औषधीय गुण भी पाया जाता है।

भूमि तथा जलवायु – लहसुन की खेती लगभग सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है लेकिन उपजाऊ दोमट मिट्टी जिसमें जल निकास की अच्छी व्यवस्था हो उपयुक्त रहती है। अत्यधिक गर्म या ठण्डा मौसम इसकी खेती के लिये अनुकूल नहीं होता है।

खेत की तैयारी – खेत की अच्छी तरह से जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिये तथा खरपतवार निकाल कर खेत समतल कर लें। इसके लिये दो गहरी जुताई तथा इसके बाद हैरो चलाना चाहिये।

खाद एवं उर्वरक – खेत की तैयारी के समय 200–250 क्विण्टल गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर के हिसाब से जमीन में मिला देना चाहिये। इसके अलावा 50 किलो नत्रजन, 60 किलो फास्फोरस व 100 किलो पोटाश कलियां लगाने से पहले देवें। 50 किलो नत्रजन बुवाई के एक माह बाद देनी चाहिये।

उपयुक्त किस्में – यमुना सफेद, लावा, मलेवा व अन्य स्थानीय किस्में।

बुवाई – लहसुन की बुवाई के लिये प्रति हैक्टेयर 5 क्विण्टल कलियां पर्याप्त होती हैं। इसकी रोपाई का समय अक्टूबर से नवम्बर है। कतार से कतार की दूरी 15 सेन्टीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 7 से 8 सेन्टीमीटर रखनी चाहिये।

सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई – कलियों की बुवाई के बाद एक हल्की सिंचाई करनी चाहिये। इसके बाद आवश्यकतानुसार 8 से 12 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिये। पकने पर पत्तियां सूखने लगे तो सिंचाई बन्द करें।

खरपतवार नष्ट करने के लिये निराई गुड़ाई करना आवश्यक है। गुड़ाई गहरी नहीं करें। अंकुरण से पूर्व प्रति हैक्टेयर 150 ग्राम ऑक्सीफ्ल्यूरफेन अथवा एक किलो पेन्डीमेथिलिन छिड़के। इसके बाद 25–30 दिन की फसल होने पर एक बार गुड़ाई करें।

प्रमुख कीट

पर्णजीवी (थ्रिप्स) – जिस फसल को बीज के लिये छोड़ा जाता है वहां इससे बहुत अधिक क्षति पहुंचती है क्योंकि इसका आक्रमण तापमान की वृद्धि के साथ–साथ तीव्रता से बढ़ता है तथा मार्च में अधिक स्पष्ट दिखाई देने लगता है।

यह कीट 1 से 1.2 मिलीमीटर लम्बा, पीलापन लिये भूरे रंग का होता है। इसके शिशु पंख हीन व पीले रंग के होते हैं। वयस्क के 4 पतले झालरदार पंख होते हैं। ये पौधों की पत्तियों के कक्ष में बहुत अधिक संख्या में छिपे रहते हैं तथा पत्तियों को खुरच कर उनसे निकला रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं। कीट ग्रस्त पत्तियों में हरे पदार्थ की कमी हो जाती है और वे चमकीली सफेद चकतेदार दिखती है। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियों के ऊपरी भाग मुड़कर सूख जाते हैं।

नियंत्रण हेतु फसल पर कीट प्रकोप प्रथम बार होते ही डायमिथेएट 30 ई सी या मिथाईल डिमेटोन 25 ई सी या मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू एस सी एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

आवश्यकतानुसार 2 से 3 सप्ताह बाद इनमें से कोई एक दवा का छिड़काव पुनः दोहरावें।

प्रमुख व्याधियां –

तुलासिता एवं अंगमारी – लहसुन की फसल इस रोग से प्रभावित होती है। तुलासिता से रोगी पौधों की पत्तियों पर सफेद सी फफूंद लग जाती है। जबकि अंगमारी रोग में सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। यह धब्बे बाद में बीच से बैंगनी रंग के हो जाते हैं। नियंत्रण हेतु फसल पर जाईनेब या मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

खुदाई, उपज एवं भण्डारण – लहसुन की फसल बुवाई के 4–5 माह बाद पककर तैयार हो जाती है। जब लहसुन की पत्तियां पीली पड़ने लगे उस समय खुदाई की जानी चाहिये। इससे लगभग 100–125 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है। खुदाई करने के बाद कंदों की सूखी पत्तियां काटकर अलग कर देनी चाहिये। बाद में इन्हें टोकरियों में भरकर सूखी एवं ठण्डी जगह पर भण्डारित करना चाहिये।

सोच समझकर खर्चे पानी,
व्यर्थ बहाने में है हानि